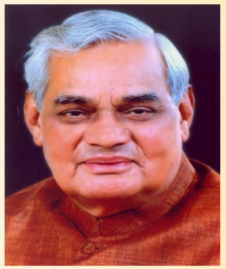

(25 दिसंबर 1924 – 16 अगस्त 2018)

'भारत रत्न' के सम्मान से विभूषित पंडित **अटल बिहारी बाजपेई** त्रिभाषाई साहित्य से स्नातक करने के बाद समाज एवं राजनीति की रपटीली राहों की ओर निकल पड़ते हैं। इन रपटीली राहों में भी, वे अपने उद्देश्य से कभी नहीं भटकते, बल्कि भटके हुए उद्देश्यों को भी, राह पर ले आने का प्रयास करते हैं। उनकी यह दूरदृष्टि भारत के तमाम आकाँक्षात्मक सपनों की, साकार प्रतिमा सिद्ध होती चली गई। उनके जीवन में, इनके लेखन में, उनके विचारों में, दूर तक कोई अंतर्विरोध जल्दी नजर नहीं आता। स्वाधीन भारत की राजनीति का यह भीष्म पितामह, कभी अपने विचारों में डिगता नज़र नहीं आया।

25 दिसंबर, 1920 को अटल–जयंती का मनाना– एक नई पहल है, जो स्वागत करने योग्य है। ऐसे तमाम कार्य करने की जरूरत भी है। अटल जी की इस जयंती पर 'आलोचन दृष्टि'–परिवार, उनको तथा इस कार्यक्रम को सफल बनाने वालों को, सादर नमन करता है और अटलजी की आकांक्षा, जो कि उनकी कविता **'स्वप्न देखा था कभी'** में व्यक्त हुई है, का समर्थन भी। यह कविता लगभग 20 वर्ष पहले लिखी गई है, पर आज भी हमारे अंदर ऊर्जा एवं उत्साह का संचार करती है और प्रेरणात्मक शक्ति भी प्रदान करती है। प्रस्तुत है उनकी कविता **स्वप्न देखा था कभी....।**

–डॉ. सुनील कुमार मानस

स्वप्न देखा था कभी

स्वप्न देखा था कभी, जो आज हर धड़कन में है।
एक नया भारत बनाने का इरादा मन में है।।

एक नया भारत, कि जिसमें एक नया विश्वास हो,
जिसकी आँखों में चमक हो, एक नया उल्लास हो,
हो जहाँ सम्मान हर एक जाति, हर एक धर्म का,
सब समर्पित हों जिसे, वह लक्ष्य जिसके पास हो
एक नया अभिमान अपने देश के जन–जन में है।
एक नया भारत बनाने का इरादा मन में है।।

बढ़ रहे हैं हम प्रगति की ओर, जिस रफ़्तार से,
कर रहा है नमन, यह विश्व भी उस पार से,
पर अधूरी है विजय जब तक गरीबी है यहाँ,
मुक्त करना है हमें अब देश को इस भार से,
एक नया संकल्प–सा अब तो यहाँ जीवन में है
एक नया भारत बनाने का इरादा मन में है।

भूख जो जड़ से मिटा दे, वह उगाना है हमें
प्यास न बाकी रहे, वह जल बहाना है हमें,
जो प्रगति से जोड़ दे, ऐसी सड़क ही चाहिए
देश सारा गा सके वह गीत गाना है हमें,
एक नया संगीत देखो आज कण–कण में है।
एक नया भारत बनाने का इरादा मन में है।।

–अटल बिहारी वाजपेयी

संपादकीय / प्रकाशकीय पता :–
आलोचन दृष्टि प्रकाशन
आजाद नगर, बिन्दकी, जनपद–फतेहपुर, उ0प्र0–212635
ई–मेल : aalochan.p@gmail.com
दूरभाष : 09580560498 / 09451949951 / 7376267327

आलोचन दृष्टि वर्ष-5 अंक-20 अक्टूबर-दिसम्बर, 2020 ISSN : 2455-4219

ISSN : 2455-4219

आलोचन दृष्टि
Aalochan Drishti

An International Peer Reviewed Refereed
Research Journal of Humanities

वर्ष-5 अंक-20 अक्टूबर-दिसम्बर, 2020

प्रधान-संपादक
डॉ० सुनील कुमार मानस

संपादक
डॉ० योगेश कुमार तिवारी

प्रबंध-संपादक
श्री सुधीर कुमार तिवारी

ISSN : 2455-4219

आलोचन दृष्टि

Aalochan Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal of Humanities

वर्ष-5	अंक-20	अक्टूबर-दिसम्बर, 2020
Year - 05	**Volome - 20**	**October-December, 2020**

प्रधान-संपादक

डॉ० सुनील कुमार मानस

संपादक

डॉ० योगेश कुमार तिवारी

प्रबंध-संपादक

श्री सुधीर कुमार तिवारी

© **प्रकाशक :**

संपादकीय / प्रकाशकीय पता :–

आलोचन दृष्टि प्रकाशन,

आजाद नगर, बिन्दकी, जनपद–फतेहपुर,

उ0प्र0–212635

ई–मेल : aalochan.p@gmail.com

दूरभाष :

9580560498 / 9451949951 / 7376267327

मुद्रण :– जय ग्राफिक्स एण्ड कान्सट्रक्सन,
आई0टी0आई0 रोड़, फतेहपुर–212601।

सदस्यता शुल्क	एक अंक	वार्षिक	आजीवन
व्यक्तिगत	300	1200	10,000
संस्थागत	400	1500	15,000

विषयानुक्रमणिका

1.	रामचरित मानस की लोकोन्मुखता और तुलसीदास *डॉ. मीनाक्षी मिश्रा*	1-4
2.	साहिर लुधियानवी के गीतों में चेतनात्मक-सृष्टि *डॉ. रतन लाल*	5-9
3.	फिल्मों और धारावाहिकों का बाजार: प्यूजन : वेब-सीरीज *डॉ. प्रणु शुक्ला*	10-13
4.	'रुकोगी नहीं राधिका' : स्त्री-स्वाधीनता की यात्रा *डॉ. बीना जैन*	14-18
5.	कालिदास विरचित त्रोटक विक्रमोर्वशीय में शृंगार-रस *डॉ. विक्रम*	19-22
6.	'झूठा सच' उपन्यास में विभाजन की विभीषिका *डॉ. शालिनी माहेश्वरी*	23-29
7.	भारतेंदु हरिश्चन्द्र की आलोचनात्मक-दृष्टि *ऋतु*	30-32
8.	रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में जीवन-मूल्य *डॉ. बाबूलाल बैरवा एवं रजाक शाह कादरी*	33-36
9.	देव बनाम बिहारी : पक्षपात की साहित्यिक वृत्ति *डॉ. बीरेन्द्र सिंह*	37-42
10.	मन रे! जागत रहिए भाई (अलख जगाती कबीर की वाणी और उनकी सामाजिक चेतना) *अंकिता शाम्भवी वर्मा*	43-47
11.	'आल्हखंड' की स्त्री-पात्रों का बहुआयामी रूप : एक अवलोकन *अभिनव*	48-52
12.	पंडित बस्तीराम के साहित्य में लोक-तत्त्व *पूनम*	53-56
13.	बद्री सिंह भाटिया के उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन *कुसुम देवी*	57-60
14.	हरियाणा के लोकगीतों में आध्यात्मिक-रस *सुमन*	61-65
15.	भारतीय साहित्य और अनुवाद *डॉ. सत्यवीर*	66-69
16.	दलित साहित्य की समाजशास्त्रीय दृष्टि का अनुशीलन *अमृत लाल जीनगर एवं डॉ. विदुषी आमेटा*	70-75
17.	नालन्दा का चुना गच निर्मित बौधिसत्व प्रतिमा *डॉ. संजय कुमार*	76-85
18.	भारत में आने वाले प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पर हुए कोरोना महामारी के परिणामों ... *डॉ. लक्ष्मीकांत शिवदास हुरणे*	86-90

19.	कोरोना काल और महिलाएँ *डॉ. चित्रा माली*	91-93
20.	माध्यमिक स्तरीय सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक रूढ़िवादिता *जयंती एवं डॉ. ज्योति कुमारी*	94-101
21.	भारतीय समाज में हिन्दू महिला सम्पति अधिकार (मिथक व यथार्थ का ...) *आभा मिश्रा एवं डॉ. विजय कुमार वर्मा*	102-105
22.	सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की शिक्षा प्रणाली पर कोविड-19 का प्रभाव... *अब्दुल्लाह एवं डॉ. शैलजा सिंह*	106-111
23.	धान के न्यनूतम समर्थन मूल्य-निर्धारिण का किसानों की आर्थिक-स्थिति पर प्रभाव *भावना ठक्कर*	112-114
24.	**Impact of Agitation of Gorkhas of Darjeeling in 2017 on School...** *Ms. Prerna Mukhia & Dr. Sweta Dvivedi*	115-119
25.	**The Spirit of India : Hindu Philosophy in the Select Novels of R. K. ...** *Dr. Anju K. N.*	120-123
26.	**CASHLESS ECONOMY IN INDIA** *Sukanta Mazumder*	124-128
27.	**Women's Economic Empowerment through Self-Help Groups: A Study ...** *Dr. Rahul Sarania*	129-135
28.	**AMITAV GHOSH AS A POST MODERN NOVELIST** *P. Malathi & Dr. N. Ramesh*	136-139
29.	**POST COLONIAL POLITICS IN ROHINTON MISTRY'S NOVELS** *K. Kannadasan & Dr. N. Ramesh*	140-143
30.	**Scenario of Municipal Solid Waste Disposal and Processing Practice ...** *Dr. Ashwani Kumar & Dhiraj Kumar Bharti*	144-151
31.	**Unracialized, shared victimhood of women in Toni Morrison's *A Mercy*** *Urfana Nabi*	152-157
32.	बृहच्छब्देन्दुशेखरदिशा षः प्रत्ययस्य इति सूत्रस्य पदकृत्यविमर्शः *सौमित्र आचार्यः*	158-162
33.	उपसर्गार्थचन्द्रिकानुसारं अपपूर्वकस्य ईक्ष दर्शने इति धातोः अर्थविमर्शः *नित्यानन्दमान्ना*	163-166

'रुकोगी नहीं राधिका' : स्त्री-स्वाधीनता की यात्रा

डॉ. बीना जैन*

"बीसवीं शताब्दी के आखिरी तीन दशकों के बीच कथा कारों की जो कई पीढ़ियां एक साथ सक्रिय रही हैं उनमें पुरुषों के साथ महिलाओं ने भी बड़ी संख्या में हिस्सेदारी की है। समाज में स्त्री की स्थिति, उसकी पीड़ा, यंत्रणा, बेबसी, असमंजस, विद्रोह, संघर्ष, महत्त्वाकांक्षा, शक्ति, और कहीं–कहीं सिर्फ उसके होने को, तरह–तरह से अभिव्यक्ति देने वाले उपन्यासों की बड़ी भरी–पूरी दुनिया मिलती है जिसकी रचना महिलाओं की कलम से हुई है।"[1] उषा प्रियंवदा भी उसी पांत में अपनी हिस्सेदारी दर्ज करती हैं। 'रुकोगी नहीं राधिका' उनका दूसरा उपन्यास है जो उनके प्रथम उपन्यास 'पचपन खंभे लाल दीवारें' की नायिका सुषमा के, व्यक्तिगत इच्छाओं, आकांक्षाओं का गला घोंट कर जीवन जीने वाली नारी की परंपरागत छवि को खारिज करते हुए अपना जीवन स्वयं के अनुरूप गढ़ने की आकांक्षाओं से भरी नारी की एक नई छवि निर्मित करता है। बीसवीं शताब्दी के सातवें दशक के उत्तरार्ध में छपने वाला यह उपन्यास एक बड़ा बदलाव इंगित करता है।

राधिका इसकी मुख्य किरदार है जिसे अक्सरहां प्रवासी भारतीय की समस्याओं या आस्तित्ववादी मुहावरे तले विश्लेषित किया जाता है लेकिन वस्तुतः यह उपन्यास नारी मुक्ति के प्रश्नों को केंद्र में रखते हुए आधुनिक समाज में होने वाले परिवर्तनों, बदलते रिश्तों, टूटते जीवन मूल्यों, स्वार्थपरता के मध्य परिवार के बनते–बिगड़ते संबंधों और ताल–मेल न बिठा सकने के कारण अकेले होते हुए सदस्यों की पीड़ा की बारीकी से पड़ताल करता है।

उपन्यास का कथानक राधिका के इर्द–गिर्द घूमता है। राधिका एक संभ्रांत प्रतिष्ठित कला आलोचक की पढ़ी–लिखी, साहसी, अपनी मर्जी से जीवन जीने वाली पुत्री है। राधिका के पिता ने उसे जीवन में बहुत छूट दी हुई है। वह एक व्यक्तित्व के पूरे विकास में दृढ़ विश्वास रखते हैं। इसीलिए राधिका पूरे नगर में स्वच्छंद वायु के झोंकों की तरह डोलती फिरती है। वह जो ठान लेती है वही करती है। कोई उस पर दबाव नहीं डाल सकता। माँ की मृत्यु के पश्चात अधिकांश समय पापा के साथ बिताने के कारण वह अपने पिता से गहरे–से जुड़ी हुई है और पिता के अध्ययन–अनुशीलन में हाथ भी बंटाती है। राधिका एक समझदार लड़की है लेकिन मां की मृत्यु के अठारह वर्ष बाद पिता के पुनर्विवाह की घटना उसके जीवन को विश्रृंखलित कर देती है। सकते में आई राधिका को एक झटका लगता है। उसके मन में स्थापित आदर्श पिता की छवि खंडित हो जाती है वह बिखर जाती है। अपने पिता को क्षमा करना उसके लिए असंभव है। 'पिता के खाली क्षणों की संगिनी पूरे जीवन की धुरी, अचानक से वह स्थान राधिका को उनकी नई पत्नी के लिए खाली करना पड़ा। उसे स्थान देने के लिए राधिका को हटना पड़ा था और यह बात वह कभी नहीं भूलती।'[2] "पापा केवल पिता, लेखक, वकील बनकर ही संतुष्ट नहीं थे, यह उसके सामने स्पष्ट था। वह जीवन में परिपूर्णता चाहते थे. एक युवा शरीर का साथ, और इसी बोध से राधिका के मन में घोर वितृष्णा भर उठी। यह उन्हें सूझी क्या ?"[3] नई माँ विद्या के साथ उस घर में रहना असहनीय है। पिता पर पराश्रिता बेटी कहीं नहीं जा सकती, पिता उसकी इस मजबूरी से अवगत हैं, "और यदि राधिका घर से चली भी जाएगी, तो शायद वे रोकेंगे नहीं, क्योंकि वे जानते हैं कि राधिका कहीं भी नहीं जा सकती।"[4] राधिका इस मजबूरी को तोड़कर कोई भी नौकरी करके आत्मनिर्भर होना चाहती है। भाई के घर आई स्वाभिमानी, आहत राधिका पिता के साथ घर वापिस जाने से जाने से इंकार कर देती है। 'बस बहुत हो चुका आपने अपनी इच्छाओं के सामने कभी मेरी खुशी का ख्याल नहीं किया। बस अब आप सब लोग मुझे अकेला छोड़ दें।"[5] वह विवाह का विकल्प भी ठुकरा देती है– 'मैं अभी विवाह नहीं करना चाहती, राधिका ने दृढ़ स्वर में कहा,

---

* एसोसिएट प्रोफेसर, किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।